

तटीय मेखला प्रबंधन



केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी
अनुसंधान संस्थान
कोच्ची

भारतीय तटीय मेखला प्रबन्धन - एकीकृत अभिगम की आवश्यकता

के. विजयकुमारन

केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान का माँगलूर अनुसंधान केंद्र, माँगलूर, कर्नाटक

आमुख

तटीय मेखला स्थल, सागर और वायुमंडल के निरन्तर प्रभाव का प्रबल गतिकीय क्षेत्र है। इसका भौगोलिक महत्व इन तथ्यों से स्पष्ट हो जाता है कि तटीय प्रदेश (समुद्र स्तर \pm 200 मी.) पृथ्वी का 18% तक आता है और विश्व की प्राथमिक उत्पादकता की एक तिहाई और मछली उत्पादन का 90% इस क्षेत्र से प्राप्त होता है। विश्व की 60% लोग तटीय मेखला में बसते हैं और महानगरों के दो तिहाई भाग 1.6 मिलियन लोगों के साथ तटीय मेखला में स्थित है। इसके विपरीत पूरे सागरों की तुलना में तटीय सागरों के ऊपरितल भाग केवल 8%, आयतन 0.5 से कम, उत्पादन सागरीय उत्पादन के 14% और विनाइट्रिकेशन 50% देखा जाता है। इसके अतिरिक्त 80% सागरीय वस्तुओं का दफ़न, 90% अवसादी खनीजीभवन, 75-90% नदीय तलछटों का डुबाव और 50% से अधिक सार्वभौमिक कार्बनेट निक्षेपण इन तटीय सागरों में होता है।

भारत के 8129 कि मी लंबाई की तट रेखा 11 बड़े और 139 छोटे पत्तन, 6 प्रमुख और 27 छोटे मत्स्यन पोताश्रय, 1332 परंपरागत मछली अवतरण केंद्रों और 3202 मत्स्यन गाँवों से समृद्ध है। छह मिलियन से भी अधिक मछुए 59000 यंत्रीकृत, 75000 मोटोरीकृत और लगभग 100000 गैरमोटोरीकृत नावों के जरिए सीमित मात्स्यिकी संपदाओं का संग्रहण कर रहे हैं। पत्तनों के आस पास उद्योगों की स्थापना और मानव बसाव से इस क्षेत्र के पर्यावरण में बदलाव आ गया है। अव्यवस्थित नगर और जलकृषि विकास ने तटीय पर्यावरण को भारी क्षति पहुँचायी है।

बढ़ती जानेवाली जनसंख्या के साथ साथ स्थल और संपदाओं के लिए चढ़ने वाली



माँग में पड़कर विश्व भर की तटीय मेखला की विस्तृति और संपदाएं दिन-ब-दिन घट रही है। आजीविका के लिए तटीय मेखला पर आश्रित लोगों पर इसका तीक्ष्ण प्रहार पड़ता है। ये बातें तटीय मेखलाओं के स्थायित्व और वहनीयता के लिए तटीय मेखला प्रबंधन की आवश्यकता पर ज़ोर देती हैं।

तटीय मेखला के विभिन्न आयाम

तटीय मेखला प्रबंधन के लिए इसके प्रमुख आयामों पर जानकारी पूर्वापेक्षित होती है। इसका भौतिक आयाम स्थल, जल और वायुमंडल से बनाए है, जो अन्य आयामों के अस्तित्व का आधार है। इस प्रणाली में मानव द्वारा किए जाने वाले परिवर्तन इसकी पूर्वस्थिति में लाए जाने में असमर्थ बनाए जाते हैं। कई अपरिवर्तनीय परिवर्तनों के लिए कारण बन जाता है। इसके जैविक आयाम में तटीय पर्यावरण में विभिन्न जीव शामिल हैं। तटीय मेखला के जैविक और भौतिक आयामों का संबंध इतना घनिष्ठ है कि विभिन्न संघटक अन्योन्याश्रित होकर एक जटिल प्रणाली का रूपान्तरण करता है। तीसरा और सबसे महत्वपूर्ण आयाम है मानव या सामाजिक आयाम जिसकी निरंतरता अन्य दो आयामों में आश्रित रहती है।

तटीय मेखला का टिकाऊपन

एक प्रणाली की निरंतरता से मतलब है कोई घटती और ह्रास के बिना अनन्तित होकर क्रियान्वित रहना। सामाजिक दृष्टि में इसका मतलब है वर्तमान पीढ़ी द्वारा उपभोग करनेवाली संपदा और संपत्तियों का स्रोत आनेवाली पीढ़ियों के लिए भी बचाये रखना। एक नियंत्रित तौर पर परिवर्तन या उपयोग भौतिक संपदाओं को उतना नाश करनेवाला नहीं है। इसी प्रकार जैव संपदाओं के विदोहन को इष्टतम स्तर तक बनाए रखे जाए तो प्राकृतिक विभव भी स्वयं संवृद्धि प्राप्त की जाएगी। लेकिन जनसंख्या में वृद्धि सभी संपदाओं के विदोहन पर दबाव के साथ प्रभव में अवक्षय और आय में कमी पैदा कर रही है। इस अवस्था से बच निकलना निरंतर विकास का प्रथम चरण है।

तटीय मेखला संबंधी समस्याएं

जनसंख्या में विस्फोटनात्मक वृद्धि, संपदा अवक्षय से उत्पन्न गरीबी, मात्स्यिकी प्रभवों और आवासों में घटती और वैकल्पिक आजीविका अभाव भारतीय तटीय मेखला का वर्तमान मुख मुद्रा है। इसका विस्तृत वर्गीकरण नीचे दिया जाता है।

प्राकृतिक संपदाओं का निम्नीकरण

पुलिन अपरदन, अतिविदोहन द्वारा मैंग्रोव और प्रवाल झाडियों का नाश, अग्रतट क्षेत्रों का उद्धार, बालू खनन, अति मत्स्यन, आवास और जैवविविधता का अवक्षय आदि तटीय मेखला की निरंतरता को धमकी देनेवाले घटक हैं। औद्योगिक, घरेलू, कृषि और अन्य स्रोतों से उत्पन्न प्रदूषण तटीय मेखला के स्वास्थ्य पर विपरीत असर डालता है। इसके परिणामस्वरूप तटीय जलक्षेत्रों में होनेवाली घटती, सुपोषण, मछलियों का नाश आदि तटीय समुदायों के लिए गंभीर समस्याएं हैं।

तटीय मेखला के उपभोग के लिए प्रतियोगिता

अग्रतट के पहुँच में विघ्न, प्रदूषण से उपयोगहीन पड़े पुलिन क्षेत्र, मैंग्रोव क्षेत्र और तटीय जल निकायों की जलकृषि या औद्योगिक आवश्यकताओं के लिए परिवर्तन या उद्धार, तटीय समुदायों का विस्थापन और औद्योगिक एवं पत्तन विकास में हुई आजीविका समस्याएं तटीय मेखला उपभोक्ताओं और उद्धारकों के बीच संघर्ष बढ़ाने का कारण बन गया।

प्राकृतिक दुर्घटनाओं द्वारा नाश

तटीय क्षेत्रों में वर्धित मानवीय आवास और आर्थिक क्रियाकलापों से उत्पन्न सामान्य घटनाएं और प्रचुर चक्रवात, आँधियों से उत्पन्न भाड़, तरंगिल अपरदन आदि पर्यावरणीय दुर्घटनाएं जो दुनिया भर अभयार्थियों की संख्या बढ़ाने का कारण बन जाता है। सूनामी जैसा विरल प्रतिभास भी तटीय समुदाय के जीवन और संपत्तियों पर खेलकर जोखिम में डाल देता है। इसके अतिरिक्त भूमण्डलीय तापन, जलवायु परिवर्तन, समुद्र स्तर में वृद्धि भी तटीय लोगों के लिए हानिकारक है।

तटीय प्रबन्धन अभिगम

मानव जीवन और संपत्ति और प्राकृतिक संपदाओं को सुरक्षा देना और तटीय निवासियों का आर्थिक स्वास्थ्य बनाए रखना तटीय मेखला प्रबन्धन का महत्वपूर्ण लक्ष्य है। इसके लिए उचित एवं दीर्घकालिक योजनाओं और प्रबन्धन रीतियों का विकास सुनिश्चित करना चाहिए। तटीय मेखला की योजना और प्रबन्धन में पहले सूचित किए गए तीन आयामों को समाविष्ट करना चाहिए। एक यू एन डी पी सर्वेक्षण (बोक्स) में तीन प्रकार के तटीय प्रबन्धन पर प्रतिपादन किया गया है। इस में यह देखा जा सकता है कि प्रथम दो रीतियों को अपनी परिसीमाएं हैं और तीसरी योजना, यानि एकीकृत तटीय प्रबन्धन तटीय मेखला के निरंतर विकास के लिए विस्तृत रूप से स्वीकृत तरीका है।

एकीकृत तटीय प्रबन्धन

एकीकृत तटीय प्रबन्धन एक ऐसा तरीका है जो सरकार और समुदाय, विज्ञान और प्रबन्धन और सेक्टरल और लोक हितों के बीच संबन्ध जोड़कर तटीय पारिस्थितिकी और संपदाओं की सुरक्षा और विकास के लिए एकीकृत योजना के निर्माण और कार्यान्वयन करता है। जैविक विविधता और तटीय पारिस्थितिकी तंत्र की सुरक्षा के साथ तटीय संपदाओं पर आश्रित मानव समुदायों की जिन्दगी में प्रगति लाना एकीकृत तटीय प्रबन्धन का सर्वतोमुख लक्ष्य है। तटीय क्षेत्रों के प्रबन्धन के लिए

एकीकृत अभिगम की संकल्पना करते वक्त भौगोलिक, खंडीय, राजनीतिक और संस्थानीय पहलुओं पर विचार करने के साथ प्रमुख सामाजिक संस्थानीय और पर्यावरणीय पहलुओं पर अंतराशाखीय विश्लेषण को प्रोत्साहित करना भी अनिवार्य है।

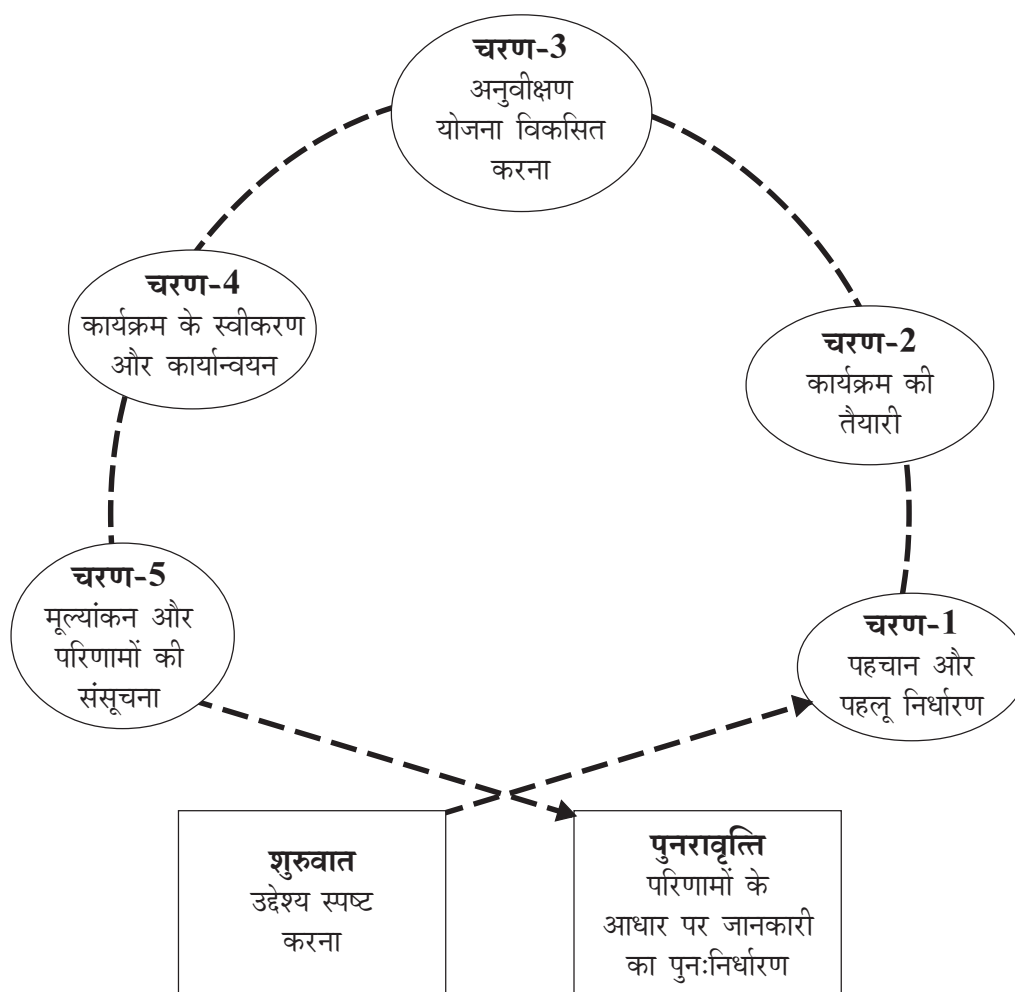
एक प्रत्येक क्षेत्र के लिए प्रयुक्त एकीकृत तटीय प्रबन्धन प्रक्रिया में उस क्षेत्र के निवासियों को प्रभावित अभावों और आकांक्षाओं के संदर्भ में मात्स्यिकी, जलकृषि, कृषि, वानिकी, औद्योगिक विनिर्माण, अपशिष्ट निपटान, पर्यटन आदि सभी संबंधित पहलुओं पर विचार करना अनिवार्य है। इसमें अनम्य योजना के बदले अनुभव द्वारा सफलता प्राप्त करने लायक गतिकीय नीतियों की परिकल्पना के लिए कदम उठाना चाहिए (चित्र)। प्रबन्धन की निरंतरता भरोसा देने लायक होना चाहिए। सब से परे संपदाओं का समान बंटन और विकास और परिरक्षण के बीच संतुलन साध्य प्रबन्धन प्रक्रियाओं का निर्माण करना चाहिए।

भारतीय परिदृश्य

विभिन्न अभिकरणों को विभिन्न संपदाओं या विकासीय क्रियाकलापों पर क्षेत्राधिकार होने की दृष्टि में भारत के कई क्षेत्रों में खंडीय स्तर का प्रबन्धन स्वीकार किया गया है। तटीय विनियमन क्षेत्र (सी आर इज़ड) अधिसूचना और समुद्री मात्स्यिकी विनियमन आधिनियम आदि की कुछ परिसीमाएं होती हैं। हाल की एक तटीय मेखला प्रबन्धन योजना विकास के कुछ पहलुओं

बढ़ाया गया खंडीय प्रबन्धन	तटीय मेखला प्रबन्धन	एकीकृत तटीय प्रबन्धन
एक एकल सेक्टर या विषय पर केंद्रित करके अन्य सेक्टरों, पारिस्थितिक तंत्र प्रक्रियाओं और संस्थानीय क्षमता पर सुस्पष्ट रूप से ध्यान लगाना	भौगोलिक रूप रेखा के अनुसार संकीर्ण रूप में अंकित तटरेखा के अभिलक्षणों और प्रबन्धकीय पहलुओं पर ध्यान देकर बहु-सेक्टरल योजना और विनियमन	तटीय मेखला प्रबन्धन के क्रोस सेक्टरल अभिलक्षण को तटीय जलक्षेत्रों और सागरों के पारिस्थितिकी की गतिविधियों के साथ विचार करना

बोक्स - तटीय प्रबंधन की एक टाइपोलजी



चित्र - आइ सी एम परियोजना चक्र (मारगोलिस आदि, 1997 से अनुकूलित)

पर ध्यान देने योग्य होने पर भी, कारीगरी मछुआरों के परंपरागत अधिकारों की सुरक्षा देने में सक्षम नहीं होने के कारण आलोचना की गयी है। एकीकृत तटीय प्रबन्धन के सिद्धान्तों को जोड़कर भागीदारी रीतियों का निर्माण करना सामयिक होता है। देश में एकीकृत तटीय प्रबन्धन कार्यक्रमों के आयोजन और कार्यान्वयन के लिए विभिन्न सेक्टरों और पणधारी वर्गों के प्रतिनिधित्व के

साथ एक अभिकरण होना अनिवार्य है। दुनिया के कई भागों में एकीकृत तटीय प्रबन्धन द्वारा प्राप्त सफलता और विफलता संबंधी अनुभवों पर अध्ययन उत्कृष्ट रणनीतियों के साथ भारतीय तटों पर सक्षम एकीकृत तटीय प्रबन्धन रीति रूपायित करने में सहायक निकलेगा। ●